बाहर से सामान लाना सब्जी लाना, और राशन लाना इत्यादि ये सभी कार्य के लिए इसका उपयोग बढ़ गया है। और लोग पॉलिथीन का प्रयोग बहुत ज्यादा ही करने लगे हैं। क्यूंकि बाजार में पॉलिथीन आसानी से उपलब्ध है और बड़े पैमाने पर इसका प्रयोग किया जाता है।

पॉलिथीन के दुष्प्रभाव को रोकने के उपायः

1.पॉलीथिन से बनी वस्तुओं का बहिष्कार करें।
2.पॉलीथिन की बैग और बोतल जो कि उन्हें इस्तेमाल के योग्य हू उन्हें जहाँ तहाँ नहीं फेंके।
3.पॉलीथिन से बनी हुई ऐसी वस्तुओं के इस्तेमाल से बचें जिन्हें एक बार इस्तेमाल में लिए जाने के बाद फेंकना पड़े।
4.पॉलीथिन की जगह कपड़े, कागज और जुट से बने थैलों का इस्तेमाल करें।
5.जब भी आप कोई वस्तु खरीदने जाए तो फिर से कपड़े का थैला अपने साथ लेकर जाएं जिससे कि आपको प्लास्टिक की थैलियों में सामान नहीं लाना पड़े।
6.दुकानदार से सामान खरीदते वक्त उसे कहें कि कपड़े या कागज से बनी थैलों में ही समान दे।
7.खाने की वस्तुओं के लिए स्टील या फिर मिट्टी के बर्तनों को प्राथमिकता दें.
8.पॉलीथिन के दुष्प्रभाव का प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए जिससे कि लोगों द्वारा इसको कम उपयोग में लिया जाए।
9.स्कूलों में विद्यार्थियों को पॉलीथिन के दुष्प्रभाव के बारे में बताना चाहिए इस पर वाद–विवाद प्रतियोगिता होनी चाहिए जिससे कि विद्यार्थियों को पता चल सके की प्लास्टिक हमारे जीवन के लिए कितना हानिकारक है जिससे कि वह बचपन से ही कम से कम प्लास्टिक का इस्तेमाल करने लगेंगे।
10.कभी भी पॉलीथिन को स्वयं नष्ट करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए क्योंकि इससे हम किसी ना किसी प्रकार के प्रदूषण को बढ़ावा ही देंगे. इससे अच्छा होगा कि हम किसी रिसाइकिल करने वाली कंपनी को यह प्लास्टिक दे दे।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः-
डॉ रमेश कुमार निराला, सहायक प्राध्यापक,
भैषज्य एवं विष विज्ञान विभाग, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय
एवं ए. के. झा, सहायक प्राध्यापक, गव्य व्यवसाय प्रबंधन विभाग,एस.जी.आई.टी.,पटना
विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-
प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय परिसर पटना-14
Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in
Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

RE: 8051910781 / March 2022

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2022-36

पशुओं में पॉलिथीन का दुष्प्रभाव

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

पशुओ में पॉलिथीन का दुष्प्रभाव

हमारे देश में प्रदुषण की एक रिपोर्ट के मुताबिक प्रतिदिन 15000 टन प्लास्टिक अपशिष्ट निकलता है. जो कि दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। प्लास्टिक के बढ़ते उपयोग का इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि पूरे विश्व में इतना प्लास्टिक हो गया है कि इस प्लास्टिक से पृथ्वी को 5 बार लपेटा जा सकता है।

पर्यावरण को सबसे अधिक आधुनिक युग में सुविधाओं के विस्तार ने ही चोट पहुँचाई है। अब यही प्लास्टिक मानव के जीवन एवं पशुओ के साथ–साथ पृथ्वी के वातावरण के लिए भी खतरा पैदा कर रहा है. मनुष्यों की सुविधा के लिए बनाई

गयी पॉलीथीन सबसे बड़ा सिरदर्द बन गई है। इनको जलाने से निकलने वाला धुआँ ओजोन परत को भी नुकसान पहुँचाता है जो ग्लोबल वार्मिंग का बड़ा कारण बन रहा है। देश में प्रतिवर्ष लाखों पशु–पक्षी पॉलीथीन के कचरे से मर रहे हैं। इससे लोगों में कई प्रकार की बीमारियाँ फैल रही हैं। इससे जमीन की उर्वरा शक्ति भी नष्ट हो रही है तथा भूगर्भीय जलस्रोत दूषित हो रहे हैं। पॉलीथीन कचरा जलाने से कार्बन डाईऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड एवं डाईऑक्सीन्स जैसी विषैली गैसें उत्सर्जित होती हैं। इनसे सांस, त्वचा आदि की बीमारियाँ होने की आशंका बढ़ जाती है।

पॉलीथिन का इस्तेमाल करके हम न सिर्फ पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रहे हैं, बल्कि पशुओ में गंभीर रोगों को भी न्यौता दे रहे हैं। पॉलीथिन को ऐसे ही फेंक देने से नालियाँ जाम हो जाती हैं। इससे गंदा पानी सड़कों पर फैलकर मच्छरों का घर बनता है इतना ही नहीं पशुओ दारा इनका सेवन करने से उनमे गंभीर बीमारियों का भी कारण बनते हैं।

पॉलिथीन प्रदुषण क्या है?

जब प्लास्टिक (Synthetic Plastic) पृथ्वी में जगह–जगह जमा होने लगता है और जमा होने के कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानव और जीव–जंतुओं पर इसका बुरा प्रभाव पड़ने लगता है तो इसे पॉलिथीन प्रदुषण कहा जाता है।

पॉलिथीन का दुष्प्रभावः–

कूड़े–कचरे के ढेर पर लोगों के फेंके गए पॉलिथीन जानवरों के लिए मौत का कारण बनते जा रहे हैं। है। शहर के विभिन्न कूड़ेदानों एवं अन्य स्थानों पर बेघड़क लोगों के द्वारा खाना के समान पॉलिथीन में डाल कर फेंक दिया जाता है। जिसे लावारिस जानवरों एवं गायों के द्वारा खाने के कारण बीमार होती हैं और समय से पहले मौत हो जाती हैं।

प्लास्टिक खाने के बाद यह जानवरों के पेट में इकट्ठा होता रहता है जिससे उन्हें अपच होता है और पेट में प्लास्टिक की बड़ी मात्रा जठर ग्रंथि को नुकसान पहुंचाती है साथ ही पाचन शक्ति को कमजोर कर देती है। पेट में प्लास्टिक की अधिकतम मात्रा जानवरों में जुगाली प्रक्रिया को भी बंद कर देता है।

कूड़े के ढ़ेर पर लोगों के द्वारा खाद्य सामग्री पॉलिथीन में भर के फेंक देने के कारण लावारिस घूम रहे जानवरों व गाय खाने की तलाश में घूमते हुए कचरे में फेंके गए प्लास्टिक में बंद खाना को भी खा लेते हैं। प्लास्टिक में मौजूद कई केमिकल्स की गंध खाने जैसी होती है जिसे जानवर खाना समझकर खा जाते हैं। जानवरों के लिए प्लास्टिक को पचा पाना नामुमकिन है। आंतों में जाने वाले प्लास्टिक के रिएक्शन काफी खराब होते हैं कई बार नुकीला प्लास्टिक गले के नीचे नहीं उतरता

और आंत को नुकसान पहुचाता है।

आजकल पशु विभिन्न बिमारियों की चपेट में आ रही है और उनकी की मौत भी सिर्फ सही रख रखाव न होने की बजह से भी हो रही है। जिसमें प्लास्टिक खाना भी एक प्रमुख कारणों में है।

पॉलीथिन का उपयोग कई सारे कामों को करने के लिए किया जाता है जैसे